RESEARCH HUB – International Multidisciplinary Research Journal (RHIMRJ)

मध्यकाल में नारी–शिक्षा

संध्या रानी

यू०जी०सी० नेट, इतिहास कानपुर, उ०प्र०, भारत

तुर्क–अफगान–काल में शासकों तथा समृद्धिशाली पुरुषों के संरक्षण में नारी–शिक्षा भी मंथर गति से प्रगति–पथ पर अग्रसर होती रही। आवश्यकतानुसार शिक्षा–प्रेमी नरेश तथा अन्य व्यक्ति भी नारी–शिक्षा की समुन्नति के लिए प्रयत्नशील रहे। प्रायः हिन्दू और मुसलमान स्त्रियाँ विशेष रूप से धार्मिक तथा उच्चकोटि के साहित्य के पठन–पाठन में अभिरुचि रखती थीं। फिर भी, इस काल में पर्दे की प्रथा तथा बालविवाह के कारण विदुषी नारियों का अभाव खटकता है। इसका तात्पर्य यह नहीं है कि नारियों के लिये योग्य शैक्षणिक संस्थाएँ नहीं थीं। वस्तुतः उनकी शिक्षा उपेक्षित नहीं थी। 'वाकेआते मुश्ताकी' का रचयिता शेख रिज्कुल्लाह मुश्ताकी लिखता है कि सदा से प्रवाहित शिक्षा की पावन धारा इस काल में भी प्रवाहित रही। इस काल में नारियों को सामान्य शिक्षा के साथ–साथ विविध कलाओं की तथा विज्ञान की भी शिक्षा दी जाती थी।

मूल शब्द : बाल विवाह, सामूहिक अशिक्षा , अलाउद्दीन, हिन्दू ।

साधारणतः शासक तथा कुलीन लोग अपनी पुत्रियों तथा बहनों को राज्य–भार संभालने के लिए शिक्षा दिया करते थे। वे स्वयं उनकी शिक्षा की निगरानी करते थे और आवश्यकता के अनुसार शिक्षा के विविध क्षेत्रों में दक्ष विद्वान् शिक्षकों को नियुक्त करते थे। इस प्रकार शासकों तथा कुलीन वर्ग के व्यक्तियों द्वारा की गई स्त्री–शिक्षा–व्यवस्था का अनुसरण समाज के समृद्ध लोग भी करते रहे। अतः समृद्ध होते हुए भी अपने परिवार की महिलाओं की शिक्षा की सुन्दर व्यवस्था न करने की धारणा पर विश्वास नहीं होता है। फिर भी बालकों की जो शिक्षा–व्यवस्था थी, उसकी तुलना में बालिकाओं की शिक्षा नगण्य थी। इसका कारण अभिभावकों की स्त्री–शिक्षा के प्रति अनुदार भावना ही न थी; वरन् अन्य सामाजिक अभिशाप भी थे, जो तत्कालीन गतिमान् एवं उन्मुक्त नारी–शिक्षा के मार्ग के अवरोधक थे। पर्दा एक सामाजिक बन्धन था, जिसके चलते नारी समुदाय का चहारदीवारी के अन्दर निवास करना अनिवार्य था। शिष्ट तथा कुलीन हिन्दू और मुस्लिम परिवार की स्त्रियाँ किसी अपरिचित व्यक्ति तथा परिवार के बड़े सदस्यों के सम्मुख उपस्थित नहीं हो सकती थी। इस सामाजिक बंधन से इच्छा–युक्त अभिभावक भी अपने परिवार की स्त्रियों को पूर्ण शिक्षा प्रदान करने से वंचित रह जाते थे। अतः प्रचलित रीति–रिवाज के कारण उनका बौद्धिक विकास बहुत हद तक कुठित हो जाया करता था। पर्दे की कठोरता अमीर खुसरो की प्रसिद्ध पुस्तक 'लैला–मजनू' से भी झलकती है। कवि अमीर खुसरो ने अपनी पत्रो को उपदेश दिया था कि वह दरवाजे की तरफ पीठ फेरकर तथा दीवार की ओर मुंह करके बैठे, जिससे कोई उसे देख न सके। उन दिनों स्त्रियों के लिए पर्दे में रहना ही उचित समझा जाता था।

नारी–शिक्षा के मार्ग का दूसरा बाधक अल्पायु में विवाह था। यह जटिल प्रथा हिन्दू तथा मुस्लिम समाज–दोनों में घर कर गयी थी। दोनों ही इस क्षेत्र में रूढ़िवादिता, के शिकार थे। प्रायः बारह वर्ष को अवस्था होते–होते सिन्दूर प्रत्येक मध्यकालीन बालिका के मस्तक की शोभा द्विगुणित करने लगता था। विवाहोपरान्त उसे शिक्षा के लिए अवकाश प्राप्त नहीं होता था। ऐसे अस्वस्थ सामाजिक वातावरण में मध्यकालीन भारतीय नारियों का उच्चकोटि की साहित्यक शिक्षा प्राप्त करना सम्भव न था। सामूहिक अशिक्षा के कारण ही उपर्युक्त सारे दुर्गुण समाज में व्याप्त थे। ग्रामीण, निर्धन तथा निम्नवर्ग की स्त्रियों को तो शिक्षा पाने का अवकाश ही नहीं था। वे गृह–कार्यों के बोझ से इस प्रकार दबी थीं कि उन्हें शिक्षा की ओर उन्मुख होने का अवसर ही नहीं मिलता था।

संत कबीर पर्दा–प्रथा के विरोधी और नारी–शिक्षा के पोषक थे। उन्होंने नारियों को गुरु द्वारा शिक्षा ग्रहण करने की सीख दी है–

''जो कामिनि परदा रहै, सुनै न गुरु–मुख बात ।
सो तो होगी शूकरी, फिरै उघारे गात।''

2016, RHIMRJ, All Rights Reserved *ISSN:* 2349-7637 (Online)

सल्तनत–काल में नारी शिक्षा पर बल नहीं दिया जाता था, फिर भी स्त्रियों की शिक्षा–व्यवस्था के लिए कहीं कहीं विद्यालय अवस्थित थे। साधारणतः शाही घराने की महिलाओं की शिक्षा महल में ही सम्पन्न होती थी। कतिपय ऐसे उदाहरण मिलते हैं, जिनसे ज्ञात होता है कि उन दिनों हिन्दू तथा मुस्लिम बालाओं के लिए क्रमशः विद्यालयों तथा मदरसों की व्यवस्था थी। राजकुमारी संयोगिता मदना ब्राह्मणी द्वारा संचालित विद्यालय में अध्ययन करती थी, जहाँ अन्यान्य कुमारियों के साथ कन्नौज–नरेश जयचंद की सुपुत्री भी अध्ययन करती थीं। संयोगिता के साथ रजोगुण–युक्त एक सौ दस ''छात्राएँ अध्ययन करती थीं, जिनमें एक सौ पाँच विविध देश के नरेशों की राजकन्याएँ ही थीं। मुस्लिम कन्याओं के लिए मकतब और मदरसे की व्यवस्था परिलक्षित होती है। ऐसे भी शिक्षण संस्थाएँ थीं, जहाँ हिन्दू बालकों और बालिकाओं के लिए प्राथमिक विद्यालय–स्तर तक सह–शिक्षा का प्रबन्ध था।

मुसलमान बालाएं भी प्राथमिक विद्यालय–स्तर तक सह–शिक्षा प्राप्त करती थीं इसके उपरान्त इनकी शिक्षा वैयक्तिक गृहों या किसी संस्था–विशेष में होती थी। कुछ व्यक्तिगत आश्रमों में मकतब खुले थे, जहाँ बालिकाओं को लौकिक तथा धार्मिक शिक्षा प्रदान की जाती थी। ऐसी शिक्षा मध्यम परिवार की वयोवृद्ध स्त्रियाँ, विशेष कर विधवा स्त्रियाँ ही दिया करती थीं। इन मध्यकालीन शिक्षण संस्थानों तथा वैयक्तिक आश्रमों की शिक्षा के अतिरिक्त मनोरंजनात्मक पौराणिक कथाएँ भी नारी–शिक्षा का एक उत्तम साधन थीं। इस कथा–पद्धति से हिन्दू–स्त्रियाँ विशेष रूप से प्रभावित थीं।

तुर्क–अफगान काल में पुरुषों और स्त्रियों की शिक्षा में कोई विभेद दृष्टिगोचर नहीं होता। तत्कालीन बालिकाओं को विद्यालयोय शिक्षा प्रदान करने के अतिरिक्त गृह–विज्ञान की भी विशेष शिक्षा प्रदान की जाती थी। प्राथमिक शिक्षोपरान्त बालिकायें प्रौढ़ स्त्रियों की देख–रेख में गृह–विज्ञान की शिक्षा प्राप्त करती थीं। सौभाग्यशालिनी स्त्रियों को ही उच्चकोटि की शिक्षा उपार्जन करने का अवसर प्राप्त होता था। समकालीन ग्रन्थों से कुलीन परिवार की महिलाओं की उच्च शिक्षा की पाठचर्या का ज्ञान होता है। मुसलमान स्त्रियों को कुरान, हैदीस आदि रटाया जाता था। योग्य हिन्दू–राजकन्याओं को वेद, कल्पशास्त्र निरुक्तशास्त्र, छंदः शास्त्र, ज्योतिषशास्त्र, दर्शनशास्त्र, ब्लकशास्त्रापुराण, धर्मशास्त्र, उपनिषद्, तंत्र–विद्या, गणित, कामशास्त्र, संगीतशास्त्र, चित्रकला, गृह–विज्ञान आदि की शिक्षा दी जाती थी।

पारिवारिक सुख–शांति के लिए हिन्दू–चालिकाओं को विश्व–श्रेष्ठ 'विनय–पाट' की विशेष शिक्षा दी जाती थी। विनय–पाठ सांसारिक जाल में आबद्ध नारी के लिए औषधि–स्वरूप था। मुसलमान शासकों तथा कुलीन–वर्ग के लोगों में पुत्रियों की शिक्षा की स्वतंत्र व्यवस्था थी। तुर्क–अफगान–काल की माताओं और पत्नियों ने अपने समय की राजनीति में सफलता के साथ हाथ बँटाया था। इससे स्पष्ट है कि जन्मजात बुद्धि के अतिरिक्त शिक्षा के सुदृढ़ आधार से उन्हें साहित्य की शिक्षा दी गई थी।

हिन्दू अथवा इस्लाम धर्म नारी–शिक्षा का विरोध नहीं करते हैं। प्राचीन भारत में स्त्रियों के विस्तृत ज्ञानार्जन के अनेक उदाहरण उपलब्ध होते हैं। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि मध्यकालीन भारत में स्त्रियों को किसी–न–किसी रूप में शिक्षा अवश्य दी जाती थी। किन्तु शिक्षण संस्थाओं की वह स्थिति अब नहीं थी, जो मुसलमानों के आक्रमण से पूर्व थी। मुसलमानों के आक्रमणों के समय सामाजिक संस्थाएँ भूमिसात् हो गयीं। शैक्षणिक सुविधाएँ जो बौद्ध वैरागिनियों की कुटी से मिलती थी, बिहारों तथा आश्रमों के विनाश के साथ–साथ लुप्त हो गई। भारतीय समाज का वह रूप, जिसमें परिव्राजिकाओं की पहुँच राजमहलों से लेकर झोपड़ियों तक थी, अब न रहा।

राजा भोज (ग्यारहवीं शताब्दी) की नगरी की निम्न तथा उच्च कुल की प्रायः सभी स्त्रियाँ शिक्षिता थीं। ब्राह्मण–परिवार से लेकर व्याधा की बहू तथा व्यभिचारिणी की श्रेणी तक की महिलाएँ शिष्ट एवं काव्यमयी भाषा का प्रयोग करती थीं। राजा भोज के काल को हिन्दू–नरेशों के युग में नारी–शिक्षा का स्वर्ण–युग कहा जाय तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी।

उच्च कुल तथा शाही दरबारों में राजकुमारियों तथा अन्य स्त्रियों के दैहिक विकास के लिए शरीर से संबंधित विविध प्रकार की क्रियाओं की शिक्षा दी जाती थी। बर्नी लिखता है कि स्त्रियों को अश्वारोहण कदुक–क्रीड़ा, बर्छा–संचालन, नृत्य, सगीत, शतरंज और चौसर खेलने की शिक्षा प्रदान की जाती थी। मालवा–नरेश गयासुद्दीन के काल में दरबारी स्त्रियों को मल्लयुद्ध, नृत्य, संगी तथा वाद्ययंत्रों की शिक्षा दी जाती थी। वाकेआते मुश्ताकी का लेखक शेख रिज्कुल्लाह मुश्ताकी लिखता है कि गयासुद्दीन खिलजी ने स्त्रियों के गेंद खेलने के लिए क्रीड़ा–क्षेत्र का निर्माण कराया था तथा धनुर्विद्या की शिक्षा के लिए दरबार में धनुर्धर रखे गये थे। स्त्रियाँ जल–क्रीड़ा और नृगया करना जानती थीं। कहा जाता है, बालक और बालिकाओं का सर्वप्रिय खेल कंदुक और झूला था। सर्वसाधारण खेल शतरंज घर के अन्दर खेला जाता था। अमीर खुसरो नै शतरंज का उल्लेख करते हुए लिखा है

कि शतरंज के खेल, जिससे मनुष्य अपना कष्ट भूल जाता है, उसका आविष्कार भारतवर्ष में ही हुआ। शतरंज का खेल हिन्दुस्तान के निवासियों से बढ़कर कोई भी नहीं खेल सकता है। विश्व के लोगों ने भारतवासियों से ही शतरंज का खेल सीखा है।

इल्तुततमिश की पुत्री रजिया युद्ध–प्रधान शारीरिक गतिविधियों में प्रवीण थी।'' वह अश्वारोहण कर पुरुषों की भाँति सैन्य–निरीक्षण किया करती थी। सुल्तान अल्लाउद्दीन की प्रमुख रानी रूपविचित्रा तैरना जानती थी और समय–समय पर जल–क्रीड़ा का आनन्द उठाती थी। तारीखे दाऊदी का लेखक अब्दुल्लाह लिखता है कि बादशाह महमूद की पत्नी निषंग–संचालन और अश्वारोहण में निपुण थी।

इस क्षेत्र में हिन्दू–राजकुमारियाँ तथा अन्य महिलाएँ भी पीछे नहीं थीं। मानसिक विकास के साथ–साथ उनके शारीरिक विकास का भी पूर्ण अवसर दिया जाता था। इसके लिए विद्या में अतिप्रवीण तथा श्रेष्ठ वाद्यां पर मधुर स्वर–लहरी से गानेवाली योग्य शिक्षिका को राज्याश्रय मिलता था। नाट्यशास्त्र–शिक्षण के लिए अन्तःपुर में नाट्याचार्य की भी व्यवस्था रहती थी। कभी–कभी स्वयं सगीताकला में निपुण राजा भी संगीताचार्य का कार्य किया करते थे। उन दिनों नृत्य–कला बहुत प्रचलित थी।

इसके अतिरिक्त स्त्रियों को जल–क्रीड़ा, चौपड़, कंदुक क्रीड़ा, अश्वारोहण तथा शस्त्र–संचालन की शिक्षा भी दी जाती थी। कतिपय स्त्रियाँ योगाभ्यास की भी शिक्षा प्राप्त करती थीं।समकालीन ग्रंथों में कतिपय नारियों के शारीरिक विकास से संबंधित विविध क्रियाएँ करने का उल्लेख मिलता है।भारतीय नारियों में चौपड़ का खेल बहुत प्रचलित था। सम्राट एवं सम्राज्ञी–दोनों के लिए यह खेल रूचिकर था। साधारणतः गृह–कार्यों द्वारा ही स्त्रियों का समुचित शारीरिक विकास होता था। अतः शारीरिक विकास के हेतु केवल उच्च–कुल की नारियाँ ही विशेष प्रकार के शारीरिक क्रिया–कलापों की शिक्षा ग्रहण करती थीं।

तुर्क–अफगान–कालीन भारत में शिक्षित नारियों की पर्याप्त संख्या मिलती है; किन्तु ऐसे उदाहरणों का अभाव है कि विद्या–सम्पन्न महिलाओं ने विद्या और विद्वानों को संरक्षण प्रदान किया है। संरक्षण के क्षेत्र में उनकी संख्या न्यून है। इस दिशा में शाहतुर्कान, रजियाबेगम, विश्वास देवी, धीरमती, रानी लखिमा देवी आदि महिलाएँ प्रमुख हैं।पुरुषों की भाँति कतिपय स्त्रियों ने भी विद्या तथा ज्ञान के संरक्षण का भार वहन किया था। इल्तुतमिश की पत्नी शाहतुन विद्वानों तथा धर्मनिष्ठ पुरुषों के प्रति असीम अनुग्रह, परोपकारिता तथा दानशीलता प्रदर्शित करती तथा उन्हें संरक्षण प्रदान करती थीं। इल्तुतमिश की प्रात्मजा रजिया भी विद्वानों की संरक्षिका थी। रजिया ने तबकाते नासिरी के लेखक मिनहाज–उस–सिराज को ग्वालियर के काजी–पद के साथ–साथ नासिरिया मदरसा का प्रबंध भी सुपुर्द किया था।

सुल्तान अलाउद्दीन की पत्नियों को ज्योतिष–विद्या से अधिक प्रेम था। उनके द्वारा विद्वान् ज्योतिर्विदों ने संरक्षण प्राप्त किया था। बर्नी उल्लेख करता है, ''समस्त बनिया ज्योतिष–विद्या में पारंगत थे। उन्हें सुल्तान अलाउद्दीन और उसकी धर्मपत्नियों द्वारा इतनी धनराशि प्राप्त हो गयी थी कि वे बहुत समृद्ध हो गये थे।

मुहम्मद तुगलक की माता योग्य विदेशी यात्रियों का सत्कार करती तथा यथोचित संरक्षण प्रदान करती थी। वह उनके उपहारों को स्वीकार करती, उन्हें जीवनोपयोगी भोजन तथा स्वागतार्थ पोशाक प्रदान करती थी। उसने अनेक खानकाहों का निर्माण कराया था। कश्मीरी बादशाह जैनुल आबेदीन की माँ विद्या–सम्पन्न नारी थी। उसने अपने पुत्र को मानवीय गुणों की शिक्षा दी थी। उसने अपने पुत्र को मौलाना कबीर–जैसे विद्वान् के हाथों में शिक्षा के लिए सुपुर्द किया था। दूसरे कश्मीरी सुल्तान हसन शाह की पत्नी भी विद्या और ज्ञान की सरक्षिका थी। उसने कश्मीर में मदरसा, मस्जिद और खानकाह का निर्माण किया था।

हिन्दू–नारियों द्वारा भी विद्वानों को संरक्षण प्राप्त था। कश्मीर नरेश अनन्त देव की पत्नी सूर्यमती देवी को विद्या से अटूट प्रेम था। वह विद्वान् ब्राह्मणों को दान दिया करती थी।

सिद्धराज की माँ–राजमाता मघणल्ल विद्वानों की संरक्षिका थी। उसने सुदूर देश से आगत विद्वान् कुमुदचन्द्र को वाद–विवाद के अवसर पर सहायता प्रदान की थी। उसने यह भी प्रयत्न किया था कि दूरागत विद्वान् विजयी बनें।

विद्या–संरक्षण के क्षेत्र में मिथिला–राज्य की स्त्रियाँ सबसे अग्रगण्य थीं। राजा हरिसिंह देव की पत्नी लक्ष्मी देवी की आज्ञा से पंडित रघुदेव झा ने 'पंजी–प्रबन्ध' नामक पुस्तक का संकलन किया था। राजाधिराज पुरुषोत्तम देव की माता रानी जया (जयात्मा) को विद्या से अपार स्नेह था। वाचस्पति ने 'द्वैत–निर्णय' पुस्तक की रचना रानी की प्रेरणा से की थी। अपने पति पद्म

सिंह के पश्चात् विश्वास देवी मिथिला के राज–सिंहासन पर आसीन हुई। उन्होंने बारह वर्षों तक राज्य–भार संभाला। इस काल में महाकवि विद्यापति को विश्वास देवी का संरक्षण प्राप्त था।

इस विदुषी महिला की प्राज्ञा से विद्यापति नै 'शैव सर्वस्वसार' और 'गंगावाक्यावली' की रचना की थी। नरसिंह देव (दर्पनारायण) की पत्नी धोरमती के द्वारा भी विद्यापति संरक्षित थे। उसकी प्रेरणा से महाकवि ने 'दानवाक्यावली' की रचना की थी। महाराज शिवसिंह को रानी लखिमा देवी द्वारा भी विद्यापति को संरक्षण प्राप्त था। तृतीय लखिमा देवी ओइनवार–वंशीय महाराज भैरवसिंह के छोटे भाई राजा चन्द्र सिंह 'रूपनारायण' की पत्नी थी। इसके साज–दरबार में विद्वानों का जमघट लगा रहता था। वह विद्वानों का बड़ा सत्कार करती थी। इसी की आज्ञा से मिसरू मिश्र ने 'विवादचन्द्र' और 'पदार्थचन्द्र' नामक ग्रंथ लिखे थे।'' अपने गुरु मिसरू मिश्र की सहायता से उसने 'पदार्थचन्द्र' (न्याय वैशेषिक पर भाष्य) नामक पुस्तक की रचना की थी। वस्तुतः कर्णाट और ओइनवार–वंश की रानियों ने विद्या को संरक्षण प्रदान किया था।

संदर्भ ग्रंथ :–

1. ईश्वर प्रसाद : भारतीय मध्ययुग का इतिहास
2. डॉ0 पी0 एन0 ओझा : सम आस्पेक्ट्स ऑफ मेडिकल इण्डियन कल्चर
3. ए0 एल0 श्रीवास्तव : मेडिवल इण्डियन कल्चर
4. एस0 एम0 जाफर : सम कल्चरल आस्पेक्ट्स ऑफ मुस्लिम रूल इन इण्डिया
5. गौरीशंकर हीराचंद ओझा : मध्यकालीन भारतीय संस्कृति
6. आर0 आर0 दिवाकर : बिहार थ्रू आऊट दि एजेज

2016, RHIMRJ, All Rights Reserved

ISSN: 2349-7637 (Online)